माती में आयोजित जिला स्तरीय किसान दिवस में सीडीओ व विभागीय अधिकारियों ने सुनीं समस्याएं

किसानों से कहा धान, बाजरा, मक्का क्रय केंद्रों में बेचे अपनी फसल, समस्या पर बताये

माती विकास भवन सभागार में किसान दिवस पर अधिकारियों व किसान नेताओं के साथ बैठक करती सीडीओ लक्ष्मी एन०, बैठक में मौजूद कृषि निदेशक रामबचन राम, भाकियू के अराजनीतिक संगठन के मंडल अध्यक्ष रशीद अहमद आजाद, जिलाध्यक्ष आयुष सिंह, महात्मा टिकेत संगठन के जिलाध्यक्ष विपिन तिवारी व अधिकारी कर्मचारी, छाया:आज।

(आज समाचार सेवा)

कानपुर देहात, २० नवंबर। जिलाधिकारी आलोक सिंह के निर्देशन में अन्नदाता किसानों की समस्याओं के त्वरित निदान करने के साथ-साथ केन्द्र एवं राज्य सरकार द्वारा विभिन्न विभागों द्वारा कृषक हित में संचालित योजनओं/कार्यक्रमों के सम्बन्ध में जानकारी प्रदान करने के उद्देश्य से शासन के निर्देशानुसार माह के तृतीय बुधवार 20 नवंबर को किसान दिवस का आयोजन विकास भवन सभागार में किया गया। उप कृषि निदेशक, राम बचन राम द्वारा किसान दिवस में आये अधिकारियों, किसान संगठन के प्रतिनिधियों, प्रगतिशील किसानों का औपचारिक स्वागत करते हुए किसान दिवस की कार्यवाही प्रारम्भ करते हुए किसान दिवस की कार्यवाही प्रारम्भ की गयी। उप कृषि निदेशक द्वारा प्रधानमंत्री ऊर्जा उत्थान एवं महा अभियान (पीएम कुसुम) योजना के सम्बन्ध में जानकारी प्रदान करते हुए अवगत कराया गया कि वर्तमान समय में सोलर पम्पों की आनलाइन बुकिंग प्रारम्भ है, इच्छुक किसान भाई अपने भू-गर्भ जल स्तर के आधार पर विभिन्न क्षमता यथा ०२ एच०पी०, ३ एचपी, ५ एचपी, ७.५ एचपी एवं १० एचपी क्षमता में से उपयुक्त क्षमता के सोलर पम्प की स्थापना करा सकते है। उनके द्वारा फसल अवशेष प्रबन्धन के सम्बन्ध में जागरूक करते हुए अवगत कराया गया कि फसल अवशेष, पराली जलाने से जहां एक ओर पर्यावरणीय क्षति, मृदा स्वास्थ्य एवं मित्र कीटों पर कुप्रभाव पडता है वहीं दूसरी ओर फसलों एवं ग्रामों में अग्निकांड होने की भी सम्भावना होती है। फसल अवशेष जलाने से मिट्टी के तापमान में वृद्धि होने से मृदा की भौतिक, रासायनिक एवं जैविक दशा पर विपरीत प्रभाव पडता है, मिट्टी में उपस्थित सूक्ष्म जीव नष्ट होते है जिससे जीवांश के अन्छी प्रकार से सड़ने में भी कठिनाई होती है। पौधे जीवांश से ही पोषक तत्व लेते है तथा इससे फसलों के उत्पादन में सर्वोच्च न्यायालय द्वारा फसल अवशेष जलाये जाने पर पूर्णत: रोक लगाते हुए इस दंडनीय अपराध की श्रेणी में रखा है तथा यदि किसी व्यक्ति द्वारा फसल अवशेष/पराली जलाने की घटना घटित की जाती है तो राष्ट्रीय हरित न्यायाधिकरण अधिनियम की धारा-२४ एवं २६ के अन्तर्गत उसके विरूद्ध पर्यावरण क्षतिपूर्ति हेतु २ एकड़ से कम क्षेत्र के लिए रु० २५००- प्रति घटना, २ से ५ एकड़ के लिए रु० ५०००- प्रति घटना और ५ एकड़ से अधिक क्षेत्र के लिए रु० १५०००- प्रति घटना की दर से अर्थदंड वसूले जाने का प्राविधान है। उक्त के साथ-साथ उप कृषि निदेशक द्वारा किसानों को कृषि विभाग द्वारा अनुदान पर वितरित बीज व निशुल्क मिनीकिट, जैविक खेती, कृषि निवेशों की उपलब्धता के सम्बन्ध में जानकारी प्रदान की गयी। जिला कृषि अधिकारी द्वारा जनपद में उर्वरकों की उपलब्धता के संबंध में जानकारी प्रदान करते हुए किसानों को संतुलित उर्वरकों के उपयोग करने की अपेक्षा कि गई। उनके द्वारा अवगत कराया गया कि जनपद में उर्वरकों की पर्याप्त उपलब्धता है तथा जिला प्रशासन एव कृषि विभाग नियमित छापेमारी कर यह सुनिश्चित कर रहा है कि किसानों को उन्च गुणवत्ता के कृषि निवेश निर्धारित मूल्य पर उपलब्ध हो सके। पशु पालन विभाग के प्रतिनिधि द्वारा विभाग द्वारा संचालित योजनाओं के संबंध में किसानों को विस्तृत जानकारी प्रदान कि गई। इसी प्रकार सिंचाई विभाग के अधिशासी अभियंता द्वारा अवगत कराया गया कि जनपद की नेहरो में १ दिसंबर से जल छोड़ जाएगा किसानों को सिंचाई हेतु कोई समस्या नहीं आने दी जाएगी।उद्यान निरीक्षक धनश्याम द्वारा उद्यान विभाग द्वारा संचालित योजनाओं के सम्बन्ध में जानकारी प्रदान करते हुए अवगत कराया गया कि वर्तमान समय में आलू एवं प्याज का बीज अनुदान पर वितरण हेतु उपलब्ध है, इन्छुक किसान भाई उद्यान विभाग की अधिकर्त वेबसाइट पर पंजीकरण करा कर उक्त बीज प्राप्त कर सकते है। सहायक अभियंता लघु सिचांई श्री एम०के०शुक्ला द्वारा लघु सिंचाई विभाग द्वारा संचालित उथली, मध्यम गहरी एवं गहरी बोंरिग योजना के सम्बन्ध में विस्तृत जानकारी किसानों को उपलब्ध करायी गयी। जिला कृषि रक्षा अधिकारी श्री राम नरेश द्वारा किसानों को संचारी रोग, चूहा-छछूंदर नियंत्रण कार्यक्रम में सम्बन्ध में जागरूक करने के साथ-साथ बीज शोधन व मृदा शोधन के सम्बन्ध मे जानकारी प्रदान की गयी। भूमि संरक्षण अधिकारी श्री देवेन्द्र कुमार वर्मा द्वारा भूमि संरक्षण हेतु विभाग द्वारा चलायी जा रही योजनाओं, कार्यक्रमों के सम्बन्ध में किसानों को अवगत कराया गया ।

कृषि विज्ञान केंद्र के वरिष्ठ वैज्ञानिक डा० खलील खान द्वारा मृदा स्वास्थ, जैविक खेती एवं बीज उपचार आदि के संबंध में जानकारी प्रदान की गई। उनके द्वारा किसाना को अवगत कराया गया कि पराली /फसल अवशेष जलाने पर जमीन में उपस्थित पोषक तत्व नष्ट होने के साथ किसानों के मित्र कीट जैसे केंचूआ, साँप आदि नष्ट हो जाते है। उनके द्वारा ि पराली को सढा कर जैविक कार्बन में बदल कर उर्वरक के रूप में प्रयोग करने की विधि का विस्तार से वर्णन किया गया। किसान दिवस की अध्यक्षता कर रही मुख्य विकास अधिकारी महोदया द्वारा किसानो की समस्याओं को सुन कर उनका मौके पर ही निराकरण कराया गया। मुख्य विकास अधिकारी अवगत कराया गया कि शासन द्वारा किसानों की आय को दोगुनी करने हेतु अनको योजनाऐं एवं कार्यक्रम संचालित किया जा रहे है, वर्तमान में यह आवश्यक हो गया है कि किसान संगठित हो समूह गठित कर कृषि कार्यो को करे, जिससे उनको जहां उनकी लागत में कमी आयेगी, वहीं उनकी आय में आशा से अधिक वृद्धि होगी। आयोजित किसान दिवस में कृषि विभाग, उद्यान, नलकूप, मत्स्य विभाग, अग्रणी जिला प्रबन्धक के जनपद स्तरीय अधिकारियों के साथ साथ कृषि वैज्ञानिक, भारतीय किसान यूनियन (अराज०) के मण्डल अध्यक्ष रशीद अहमद आजाद व भारतीय किसान यूनियन (अराज०) के जिलाध्यक्ष आयुष सिंह राजावत एवं विपिन तिवारी, अध्यक्ष किसान यूनियन महात्मा टिकेत गुट कानपुर देहात के साथ-साथ जनपद के लगभग ५५ किसानों द्वारा प्रतिभाग किया गया, अंत में जिला कृषि अधिकारी द्वारा अध्यक्ष महोदय की अनुमति से धन्यवाद ज्ञापित कर किसान दिवस के समापन की घोषणा की गयी।

किसान दिवस में एसडीओ रनियां की हुई शिकायत, खराब नलकूपों का उठा मुद्दा

संवाद न्यूज एजेंसी

किसान दिवस में मौजूद सीडीओ और जिला कृषि अधिकारी। स्रोत: सूचना विभाग

कानपुर देहात। माती विकास भवन सभागार में सीडीओ की अध्यक्षता में आयोजित किसान दिवस में गेहूं की बोआई के लिए पलेवा और आलू व सरसों फसल की सिंचाई जरूरत का मुद्दा किसानों ने उठाया। एसडीओ रनियां के खराब बर्ताव की शिकायत हुई। वहीं खराब राजकीय नलकूपों को जल्द ठीक कराने की मांग की गई।

विकास भवन सभागार में सीडीओ लक्ष्मी एन ने कहा कि किसानों की आय दोगुनी हो इसके लिए किसान संगठित हो समूह गठित कर कृषि कार्य करें तो लागत कम होगी और मुनाफा अधिक होगा। यहां भाकियू जिलाध्यक्ष आयुष सिंह ने कहा कि गेहूं बोवाई के लिए पलेवा और फसलों की सिंचाई के लिए बिजली आपूर्ति की जरूरत है। इधर जर्जर तारों की वजह से बिजली आपूर्ति प्रभावित होने से परेशानी है।

उन्होंने रनियां एसडीओ के खराब बर्ताव की शिकायत की। आरोप लगाया कि उन्हें किसानों से बातचीत करने का तरीका नहीं आता है। हालांकि दिवस में एसडीओ रनियां मौजूद नहीं थे। भाकियू महात्मा गुट के जिलाध्यक्ष विपिन तिवारी ने कहा कि राजकीय नलकूप खराब हैं। फसलों की सिंचाई और पलेवा की दिक्कत है। इस पर एक्सईएन नलकूप को जल्द राजकीय नलकूप संचालन के निर्देश दिए गए। यहां नहरों व बंबों में पानी छोड़ने की मांग हुई। इस पर एक्सईएन सिंचाई सुरेंद्र कौशल ने बताया कि दिसंबर शुरुआत में नहरों में पानी छोड़ा जाएगा।

यहां उप कृषि निदेशक राम बचन राम ने सोलर पंपों की ऑनलाइन बुकिंग प्रारंभ होने की जानकारी दी। यहां मृदा वैज्ञानिक डॉ. खलील ने किसानों को बताया कि पराली जलाने के बजाय में सड़ाकर खाद बनाई जाए। उर्वरक के अधिक प्रयोग से खेत में पोषक तत्वों की कमी हो जाती है।

मिट्टी की जांच कराकर जरूरी पोषक तत्व की खुराक दी जानी चाहिए। जिला कृषि अधिकारी डॉ. उमेश कुमार गुप्ता ने डीएपी व एनपीके की उपलब्धता की जानकारी दी। यहां उद्यान निरीक्षक धनश्याम, सहायक अभियंता लघु सिचांई एमके शुक्ला, जिला कृषि रक्षा अधिकारी राम नरेश, भूमि संरक्षण अधिकारी देवेंद्र कुमार वर्मा आदि रहे। भाकियू के मंडल अध्यक्ष रशीद अहमद आजाद आदि रहे।

किसान दिवस में एसडीओ रनियां की हुई शिकायत, खराब नलकूपों का उठा मुद्दा

संवाद न्यूज एजेंसी

किसान दिवस में मौजूद सीडीओ और जिला कृषि अधिकारी। स्रोत: सूचना विभाग

कानपुर देहात। माती विकास भवन सभागार में सीडीओ की अध्यक्षता में आयोजित किसान दिवस में गेहूं की बोआई के लिए पलेवा और आलू व सरसों फसल की सिंचाई जरूरत का मुद्दा किसानों ने उठाया। एसडीओ रनियां के खराब बर्ताव की शिकायत हुई। वहीं खराब राजकीय नलकूपों को जल्द ठीक कराने की मांग की गई।

विकास भवन सभागार में सीडीओ लक्ष्मी एन ने कहा कि किसानों की आय दोगुनी हो इसके लिए किसान संगठित हो समूह गठित कर कृषि कार्य करें तो लागत कम होगी और मुनाफा अधिक होगा। यहां भाकियू जिलाध्यक्ष आयुष सिंह ने कहा कि गेहूं बोवाई के लिए पलेवा और फसलों की सिंचाई के लिए बिजली आपूर्ति की जरूरत है। इधर जर्जर तारों की वजह से बिजली आपूर्ति प्रभावित होने से परेशानी है।

उन्होंने रनियां एसडीओ के खराब बर्ताव की शिकायत की। आरोप लगाया कि उन्हें किसानों से बातचीत करने का तरीका नहीं आता है। हालांकि दिवस में एसडीओ रनियां मौजूद नहीं थे। भाकियू महात्मा गुट के जिलाध्यक्ष विपिन तिवारी ने कहा कि राजकीय नलकूप खराब हैं। फसलों की सिंचाई और पलेवा की दिक्कत है। इस पर एक्सईएन नलकूप को जल्द राजकीय नलकूप संचालन के निर्देश दिए गए। यहां नहरों व बंबों में पानी छोड़ने की मांग हुई। इस पर एक्सईएन सिंचाई सुरेंद्र कौशल ने बताया कि दिसंबर शुरुआत में नहरों में पानी छोड़ा जाएगा।

यहां उप कृषि निदेशक राम बचन राम ने सोलर पंपों की ऑनलाइन बुकिंग प्रारंभ होने की जानकारी दी। यहां मृदा वैज्ञानिक डॉ. खलील ने किसानों को बताया कि पराली जलाने के बजाय में सड़ाकर खाद बनाई जाए। उर्वरक के अधिक प्रयोग से खेत में पोषक तत्वों की कमी हो जाती है।

मिट्टी की जांच कराकर जरूरी पोषक तत्व की खुराक दी जानी चाहिए। जिला कृषि अधिकारी डॉ. उमेश कुमार गुप्ता ने डीएपी व एनपीके की उपलब्धता की जानकारी दी। यहां उद्यान निरीक्षक धनश्याम, सहायक अभियंता लघु सिचांई एमके शुक्ला, जिला कृषि रक्षा अधिकारी राम नरेश, भूमि संरक्षण अधिकारी देवेंद्र कुमार वर्मा आदि रहे। भाकियू के मंडल अध्यक्ष रशीद अहमद आजाद आदि रहे।

किसान दिवस : कानपुर देहात में कृषकों के लिए आयोजित हुआ विशेष कार्यक्रम

किसानों की आय दोगुनी करने के लिए कानपुर देहात में पहल

अमन यात्रा ब्यूरो

कानपुर देहात। जिलाधिकारी आलोक सिंह के निर्देशानुसार, किसानों की समस्याओं के त्वरित समाधान और केंद्र तथा राज्य सरकार की विभिन्न कृषि योजनाओं की जानकारी देने के उद्देश्य से आज विकास भवन सभागार में किसान दिवस मनाया गया।

कार्यक्रम का उद्घाटन उप कृषि निदेशक राम बचन राम ने किया। उन्होंने प्रधानमंत्री कुसुम योजना के तहत सोलर पंपों की ऑनलाइन बुकिंग की जानकारी देते हुए किसानों को इस योजना का लाभ उठाने के लिए प्रेरित किया। साथ ही, उन्होंने फसल अवशेष जलाने के खतरों के बारे में जागरूक करते

हुए जैविक खेती को अपनाने का आह्वान किया। किसान सोलर पंपों की ऑनलाइन बुकिंग कर सकते हैं। फसल अवशेष जलाने से होने वाले नुकसान और जैविक खेती के लाभों के बारे में जानकारी दी गई। जनपद में उर्वरकों की पर्याप्त उपलब्धता सुनिश्चित की जा रही है। 1 दिसंबर से जनपद की नहरों में पानी छोड़ा जाएगा। आलू और प्याज का बीज अनुदान पर वितरित किया जा रहा है।पशु पालन विभाग की योजनाओं के बारे में जानकारी दी गई। सिंचाई विभाग ने किसानों को सिंचाई सुविधा उपलब्ध कराने का आश्वासन दिया। उद्यान विभाग ने बीज वितरण योजना के बारे में बताया। किसानों को रोगों और कीटों से फसलों को बचाने के उपाय बताए गए। भूमि संरक्षण के महत्व पर जोर दिया गया। जैविक खेती और मृदा स्वास्थ्य के बारे में जानकारी दी गई।कार्यक्रम में भारतीय किसान यूनियन (अराजक) के प्रतिनिधियों सहित लगभग 55 किसानों ने भाग लिया। किसानों ने अपनी समस्याओं को रखा और अधिकारियों ने उनके समाधान के लिए आश्वासन दिया।मुख्य विकास अधिकारी का संदेश- मुख्य विकास अधिकारी ने किसानों को संगठित होकर काम करने और कृषि आय बढ़ाने के लिए प्रेरित किया।

कानपुर, 21 नवंबर, 2024

कानपुर देहात जागरण

खेत में पयार जलाने से मिट्टी की 90 प्रतिशत नाइट्रोजन क्षमता होती खत्म

जासं, कानपुर देहात : खेत में फसल अवशेष जलाना किसी भी स्तर पर लाभदायक नहीं है। सबसे बड़ा नुकसान पयार (पराली) जलाने से यह होता है कि मिट्टी की 90 प्रतिशत नाइट्रोजन क्षमता खत्म हो जाती है इसके पूरा करने के लिए आपको खाद का प्रयोग करना पड़ेगा जिससे आपकी जेब खाली होगी। आप समझदारी से खेती करेंगे तो निश्चित ही उत्पादन बढ़ेगा और लागत भी कम आएगी इससे दोहरा फायदा आपका ही होना है। यह सलाह दैनिक जागरण के प्रश्न पहर कार्यक्रम के दौरान किसानों के सवालों का समाधान करते हुए कृषि विज्ञान केंद्र दलीप नगर के मृदा (मिट्टी) विज्ञानी डा. खलील खान ने दी। उन्होंने बताया कि फसल अवशेष प्रबंधन अपनाकर मिट्टी की सतह पर वायु एवं पानी की मात्रा को नियंत्रित किया जाता है। साथ ही दलहनी फसलों के नाइट्रोजन स्थिरीकरण हेतु सहायक है। किसान भाई प्रबंधन कर लेते हैं तो ईंधन एवं श्रम की बचत की जा सकती है जिससे किसान भाइयों की आय में वृद्धि होगी।

सवालों के जवाब देते मृदा विज्ञानी डा. खलील खान● जागरण

प्रश्न: आलू की फसल में खरपतवार हो गए हैं उनका प्रबंधन कैसे करें? रजेंद्र सिंह चौहान ग्राम ज्योति

उत्तर : सेनकार दवा 200 मिली लीटर प्रति एकड़ के हिसाब से छिड़काव करें। साथ ही धान के पयार को आलू के जमाव के बाद खेतों में फैला दें जिससे खर पतवार कम उगते हैं। साथ ही पौधों को अच्छा पोषण मिलने से उत्पादन बढ़ता है।

प्रश्न: खेत में धान फसल का अवशेष पयार पड़ा है कैसे निस्तारित करें? सुनील कुमार, फंदा असाही गांव, सरला देवी शिवली

उत्तर : फसल प्रबंधन अच्छी तरह कर लेते हैं तो खरपतवार की समस्या काफी हद तक कम हो जाती है। वहीं धान के पयार को सड़ाने के लिए पूसा डी कंपोजर का प्रयोग करें।साथ ही पयार प्रबंधन यंत्र भी आते हैं जिनकी मदद से इनका निस्तारण किया जा सकता है। खेत में ओट आ गई है और बुआई करनी है तो सुपर सीडर से बिना जोताई किए फसल की बुआई कर दें। धीरे-धीरे पयार सड़ेगा तो कीटनाशक और खाद का काम करेगा। 111

प्रश्न: हार्वेस्टर से धान कटवाने में क्या कोई कानूनी परेशानी है मजदूर नहीं मिल रहे तो क्या करें? नीतू देवी, फंदा गांव

उत्तर: हार्वेस्टर से धान काटना ठीक है लेकिन कटर मशीन लगी होनी चाहिए जिससे पयार भी कटे। अवशेष को खेत में जलाना गलत है इससे जहां मिट्टी की उर्वरा शक्ति घटती है। वातावरण प्रदूषित होता है। जागरूक किसान का परिचय देते हुए प्रबंधन के तरीकों को अपनाना बेहतर होगा। इससे लाभ मिलेगा।

प्रश्न : धान की पयार को उसी खेत में जला देना चाहिए अथवा सड़ा देना चाहिए? संतोष कुमार भैसाया रसूलाबाद

उत्तर : हमेशा यह ध्यान रखना जरूरी है कि फसल अवशेष कभी खेत में जलाना नहीं चाहिए इससे खेत के लाभदायक जीवाश्म नष्ट हो जाते हैं जिससे उर्वरा शक्ति घट जाती है। अवशेष को सड़ाने के लिए पूसा डी कंपोजर का प्रयोग करें समस्या दूर हो जाएगी।

प्रश्न : धान कटने के बाद पयार पड़ा हुआ है, सड़ने का इंतजार करेंगे तो समय अधिक लग जाएगा क्या करें? देवेंद्र सिंह ग्राम पंचायत बैरीसाल रसूलाबाद

उत्तर : चार से पांच सेंटीमीटर मिट्टी की खोदाई कर नमी देखे लें अगर नमी है तो सुपर सीडर से फसल की बोआई कर दें बस यह ध्यान रखें कि पहली सिंचाई 25 दिन के बजाय 20 दिन में ही कर दें।

प्रश्न: फसल अवशेषों को मिट्टी में मिलाने से क्या लाभ होते है? गुड्डू अकारू डेरापुर

उत्तर : धान के पुआल को मिट्टी में मिलाने से 0.36 प्रतिशत नाइट्रोजन, 0.10 प्रतिशत फास्फोरस, 1.70 प्रतिशत पोटाश मिट्टी को प्राप्त होता है। साथ ही मृदा संरचना में सुधार, पर्यावरण में सुधार, मृदा क्षरण में सुधार, जल शोषण क्षमता में वृद्धि के अलावा किसानों को आर्थिक लाभ भी होता है।

प्रश्न पयार प्रबंधन के लिए क्या क्या विकल्प हैं? पप्पू सिंह नवीवा संदेलपुर

उत्तर : धान के पयार को पशुओं के चारे के लिए प्रयोग कर सकते हैं।साथ ही इनके अवशेष को मशरूम की खेती में सार्थक प्रयोग किया जा सकता है।इसके अतिरिक्त फसल अवशेष के प्रभावी प्रयोग जैसे गत्ता, झोपड़ी, चटाई, खिलौने बनाने में प्रयोग किया जा सकता है। साथ ही फसल अवशेष को कंपोस्ट बनाने में प्रयोग किया जाता है जिससे सूक्ष्म जीव विघटक से उपचारित कर फसल अवशेष से कंपोस्ट बनाने की अवधि को कम किया जा सकता है।